अमृत प्रार्थना
भगवान से

प्रार्थना करना अर्थात अपने भावों को समर्पित करना!

हे प्रभु! यह संपूर्ण सृष्टि आपके द्वारा ही सृजित है। आप ही पालनकर्ता और आप ही संहारकर्ता हैं।आप सृष्टि के कण-कण में व्याप्त हैं। ऐसा कोई स्थान नहीं, जहाँ पर आप ना हों।और इतना होने के उपरांत भी,आप अंतर्यामी रूप से हमारे हृदय में ही विराजमान हैं!
हमारे हृदय में होने के उपरांत भी हम आपको पहचान नहीं सके, आपको जान नहीं सके।
यदि किसी को पता चल जाए,कि उसके घर के पीछे या घर में खजाना गढ़ा हुआ है,तो वह घर के सब दरवाजे को बंद कर, उस खजाने को प्राप्त करने का यत्न करता है।
दिन-रात खुदाई करता रहता है जब तक वह खजाना प्राप्त ना हो जाए ।ना खाता,है ना पीता है,ना सोता है।
बस केवल खजाने का ही ध्यान रहता है, उसी को प्राप्त करना चाहता है। मेरे हृदय में ही आप विराजमान हैं
और मैंने आप खोजने का प्राप्त करने का कभी प्रयत्न ही नहीं किया।
तो मेरी उस मूर्खता को! मेरी इस मूढ़ता को आप क्षमा करें!
मैं बाहर में ही, स्वजनों में,संसार में, विषयों में, सुख की खोज कर रहा था।आनंद की खोज कर रहा था। लेकिन आनंद स्वरूप!परमानंद स्वरूप! आप स्वयं हृदय में विराजमान!
आपकी मैंने अव्हेलना कर दी। अतः मेरे अपराध को क्षमा करें! मैंने आपके नाम का,ध्यान का सहारा लिया है।हृदय में आप प्रकाशित हों! हृदय में आप विराजमान हैं ही!
मैं आपका दर्शन कर सकूँ,ऐसी कृपा करें! कृपा करें! कृपा करें!